Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

**Answer Script Details**
**Barcode** 11767439

**Roll No.** 24040000008
**Total Mark** 50/75.00
**Exam** MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
**Subject** A020901T - Kavyshastra-II

**Question wise Mark Summary**

| Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1A | 3/5 | | | | | | |
| 1B | 3/5 | | | | | | |
| 1C | 3/5 | | | | | | |
| 1D | 4/5 | | | | | | |
| 1E | 3/5 | | | | | | |
| 1F | 3/5 | | | | | | |
| 1G | 2/5 | | | | | | |
| 1H | 3/5 | | | | | | |
| 1I | 3/5 | | | | | | |
| 2 | 11/15 | | | | | | |
| 3 | 0/15 | | | | | | |
| 4 | 0/15 | | | | | | |
| 5 | 0/15 | | | | | | |
| 6 | 0/15 | | | | | | |
| 7 | 12/15 | | | | | | |
| 8 | 0/15 | | | | | | |
| 9 | 0/15 | | | | | | |

# Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
## Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 11-11-2025 III^nd Room No. 12
Paper Code: A020901T Subject: काव्यशास्त्र II Sem. 3
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Roll No. 2404000008

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri
Signature of Invigilator
CDE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

| Q. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (a) | | | | | | | | | | |
| (b) | | | | | | | | | | |
| (c) | | | | | | | | | | |
| (d) | | | | | | | | | | |
| (e) | | | | | | | | | | |
| (f) | | | | | | | | | | |
| (g) | | | | | | | | | | |
| (h) | | | | | | | | | | |
| (i) | | | | | | | | | | |
| (j) | | | | | | | | | | |
| Total | | | | | | | | | | |

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A020901T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: M.A.
Session: 2025-26 Year/Semester: III^rd
Subject: काव्यशास्त्र - II

Paper Code: A 0 2 0 9 0 1 T
Exam Date: 1 1 - 1 1 - 2 0 2 5
Name of Candidate: S H A N Y A A G N I H O T R I
Father's Name: O N K A R A G N I H O T R I

महाविद्यालय का कोड College Code: F B 0 1
परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: F B 0 1

परीक्षा का प्रकार Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO
11767439

A020901T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 1 0 0 1 4 4 4 8 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 0 8

पेपर कोड Paper Code: A 0 2 0 9 0 1 T

Shanya Agnihotri
Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

CDE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. गोलों में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

**INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I**

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

**INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III**

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

| Correct method | Incorrect method |
|---|---|
| ① ● ③ ④ | ✓ ✗ ◉ ● |

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

## परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

**IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :**

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

**INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE**

1. Read the instructions carefully given on the Question Pap Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of dama in your answer script, if found than change the answer scr immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e. Subject Code, Subject Name and Question of the Questi Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement the exam, so that it can be corrected in TIME. After that n corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over pape should fill in status as Carry Over. Those appearing as E Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

## अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लाये, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

**INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV**

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

| | 1 | 8 | 1 | 5 | 4 | 3 | 2 | 1 | 6 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ | ⓪ |
| ① | ● | ① | ● | ① | ① | ① | ① | ● | ① | ① |
| ② | ② | ② | ② | ② | ② | ② | ● | ② | ② | ② |
| ③ | ③ | ③ | ③ | ③ | ③ | ● | ③ | ③ | ③ | ③ |
| ④ | ④ | ④ | ④ | ④ | ● | ④ | ④ | ④ | ④ | ④ |
| ⑤ | ⑤ | ⑤ | ⑤ | ● | ⑤ | ⑤ | ⑤ | ⑤ | ⑤ | ⑤ |
| ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ⑥ | ● | ⑥ |
| ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ | ⑦ |
| ⑧ | ⑧ | ● | ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ | ⑧ |
| ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ⑨ | ● |

**Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.**

01

"खण्ड - अ"

उत्तर-1(क) आचार्य मम्मट का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' काव्यशास्त्र का एक प्रामाणिक, लोकप्रिय, एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें आचार्य ने काव्य के स्वरूप आदि का वर्णन करते हुए काव्य के गुणों का प्रतिपादन किया है।

आचार्य मम्मट के अनुसार,

"माधुर्यौज: प्रसादाख्या गुणस्ते त्रय एव हि।"

अर्थात्,

माधुर्य, ओज, प्रसाद - ये तीन ही गुण हैं।

प्रसाद गुण :-

प्रसाद का अर्थ है - स्पष्टता, सहजता एवं सादगीपूर्ण सौन्दर्य।

जब शब्द - अर्थ बिना किसी कठिनाई के सरलता एवं स्पष्टता पूर्वक पाठक या श्रोता की समझ में आ जाते हैं तब वह काव्य प्रसाद गुण से युक्त होता है।

परिभाषा :-

आचार्य मम्मट के अनुसार,

"यत्रार्थ: शब्दश्च स्पष्टौ: स: प्रसाद:।"

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

02

अर्थात्
जहाँ शब्द और अर्थ स्पष्ट हों वहाँ प्रसाद गुण है।

उदाहरण :-
रामो राजमणिः सदा विराजते।

उपर्युक्त उदाहरण -
सरल, स्पष्ट है अतः यहाँ — प्रसाद गुण है।

"अत्र सर्वत्र विहितस्थितिः।"
→ मम्मटाचार्य

यह (प्रसाद गुण) सर्वत्र (सभी रसों एवं रचनाओं) में पाया जाता है। परन्तु विशेषतः भक्ति रस एवं शान्त रस में प्रयुक्त होता है।

उत्तर-1(ख) आचार्य मम्मट काव्यशास्त्र के प्रमुख आचार्यों में से एक हैं, उनका ग्रन्थ "काव्यप्रकाश" एक महत्वपूर्ण काव्यशास्त्र ग्रन्थ है।
काव्यप्रकाश में आचार्य ने काव्य के तीन गुणों का वर्णन करने के पश्चात् अलंकारों का एक विशद वर्णन किया है।
मम्मटाचार्य ने गुण एवं अलंकार को

काव्य के दो मुख्य तत्व के रूप में माना है।

अलंकार को परिभाषित करते हुए आचार्य मम्मट ने कहा है —

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यस्यालंकारौ।"

अर्थात,

अलंकार काव्य के शब्द और अर्थ को सजाने, उन्हें आकर्षक बनाने का साधन है।

आचार्य मम्मट ने अलंकार को काव्य की बाह्य शोभा कहा है।

⟹ अलंकार का स्वरूप :—

आचार्य मम्मट अलंकार के स्वरूप के विषय में कहते हैं —

- काव्य की शोभा का साधन :— अलंकार शब्द और अर्थ को सजाने का अर्थात उन्हें आकर्षक बनाने का, सौन्दर्यता लाने का कार्य करते हैं। ये काव्य की बाह्य शोभा के साधन हैं।

- रस की वृद्धि में सहायक :— अलंकार ये रस की वृद्धि में उसकी अभिव्यक्ति में सहायक होते हैं। ये अनिवार्य तत्व नहीं

Paper Code

04

बल्कि रस के अधीन हैं।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार, अलंकार शब्दों की एवं अर्थों को सजाने का कार्य करते हैं।

जिस प्रकार मनुष्य को आभूषणादि सजाते हैं उसी प्रकार, अलंकार, काव्य को सजाते हैं।

आभूषण हमारे कोई मूल तत्व नहीं हैं। उसी प्रकार अलंकार भी अनिवार्य नहीं हैं परन्तु वे रस की अभिव्यक्ति में सहायक होते हैं।

उत्तर-1(ग) आचार्य मम्मट ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' में अलंकारों का विशद वर्णन करते हुए उन्हें दो भागों में विभाजित किया है—

- शब्दालंकार - अनुप्रास, यमक, श्लेषादि।
- अर्थालंकार - उपमा, रूपक आदि।

श्लेष अलंकार :-

आचार्य मम्मट ने श्लेषालंकार की परिभाषा देते हुए कहा है—

"यत्रैकं पदं अनेकार्थके प्रयुज्यते
तदा श्लेषः।"

Do Not Write anything in this Portion

अर्थात्,
जहाँ एक पद या शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

सरल शब्दों में,
जब काव्य में कोई शब्द एक ही बार आया है परन्तु उसके अर्थ एक से अधिक हो और सभी अर्थ उपयुक्त (सार्थक) हों तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :-

नीलाम्बरः शोभते।

'नीलाम्बर' के दो अर्थ हैं -

① भगवान शिव ② आकाश

इस प्रकार यहाँ एक शब्द के एकाधिक अर्थ हैं अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

श्लेष अलंकार के भेद :-

श्लेष
- अभंगश्लेष
- सभंगश्लेष

⇒ सभंगश्लेष भी पद, वर्ण, लिंग, विभक्ति, वचन, प्रत्यय, भाषा, वाक्य के रूप में आठ प्रकार के होते हैं।

DO NOT WRITE ANYTHING IN THIS COLUMN

Paper Code

06

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर-1 (घ) आचार्य मम्मट ने अलंकार का वर्गीकरण दो भागों में किया है —

- शब्दालंकार
- अर्थालंकार

⟹ जहाँ पर अर्थात् जिस काव्य में अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न किया जाता है वहाँ अर्थालंकार होता है।

⟹ अर्थालंकार 61 प्रकार के होते हैं। — उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षादि।

"तद्रूपकमभेदो या उपमानोपमेययो"

यह 'रूपक अलंकार' की परिभाषा है। इसमें आचार्य मम्मट कहते हैं —

जब उपमान और उपमेय में भेद रहित आरोप किया जाता है वहाँ "रूपक अलंकार" होता है।

स्पष्टीकरण :-

उपमान —
वह वस्तु जिससे किसी दूसरी वस्तु की तुलना की जाए।

उपमेय —
जिसकी तुलना की जाए।

Do Not write anything in this Portion



अभेद :-

जब एक वस्तु और दूसरी वस्तु के गुण मे भेद होने पर भी उनमे साम्यता दिखायी जाए।

इस प्रकार,
जब दो वस्तुओ मे उनके गुण-धर्म मे भिन्नता होते हुए भी उन पर भेद रहित रूप से साम्यता दिखायी जाए तब वह आरोप रूपक कहलाता है।

उदाहरण :-
"सरोवर: सुवर्णमेव प्रकाशयति।"
(सरोवर सोने के समान प्रकाशित होता है)

उपर्युक्त उदाहरण में,
नदी को सोने के समान बताया है जबकि उनके गुण भिन्न हैं। अत यहाँ रूपक अलंकार है।

उत्तर-1(ख) आचार्य मम्मट ने गुण एवं अलंकार को काव्य का मुख्य तत्व माना है।
मम्मटाचार्य के अनुसार,
"माधुर्यौजः प्रसादाख्या गुणास्ते त्रय एव हि।"
अर्थात,
गुण तीन ही हैं —

- माधुर्य
- ओज
- प्रसाद

Do Not Write anything in this Portion

माधुर्य गुण :-

आचार्य मम्मट ने माधुर्य गुण को परिभाषित करते हुए कहा है-

"आह्लादकत्वं माधुर्यं श्रृंगारे द्रुतिकारणम्।"

अर्थात,

जो आनन्द स्वरूपता (आह्लादपूर्ण) है द्रुति के कारण वह माधुर्य गुण है और उसकी स्थिति श्रृंगार रस में होती है।

सरल शब्दों में,

जब द्वेषादि के निकल जाने के बाद चित्त की द्रुति (द्रवीभाव) के कारण जो आनन्द उत्पन्न होता है वह ही माधुर्य गुण है।

वह श्रृंगार रस में पाया जाता है।

जब काव्य सरल, कोमल, श्रवणप्रिय और हृदयस्पर्शी हो तब माधुर्य गुण होता है।

उदाहरण -

"तस्य हृदयं दयालु वचनं च मृदु।"

यहाँ,

'मृदु एवं दयालु भाव के कारण कोमलता की प्रतीती होती है -

इसलिए,

यहाँ माधुर्य गुण पाया गया है।

उत्तर -1(क) आचार्य मम्मट ने अनुप्रास अलंकार को शब्दालंकार के अन्तर्गत बताया है।

अनुप्रास अलंकार – जब किसी वाक्य में या पद में समान वर्णों (स्वर या व्यंजन) की बार-बार आवृत्ति होती है तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

"वर्णसाम्यानुप्रासः।"

अर्थात्
वर्णों की समानता को अनुप्रास कहते हैं।

अनुप्रास अलंकार के भेद :-

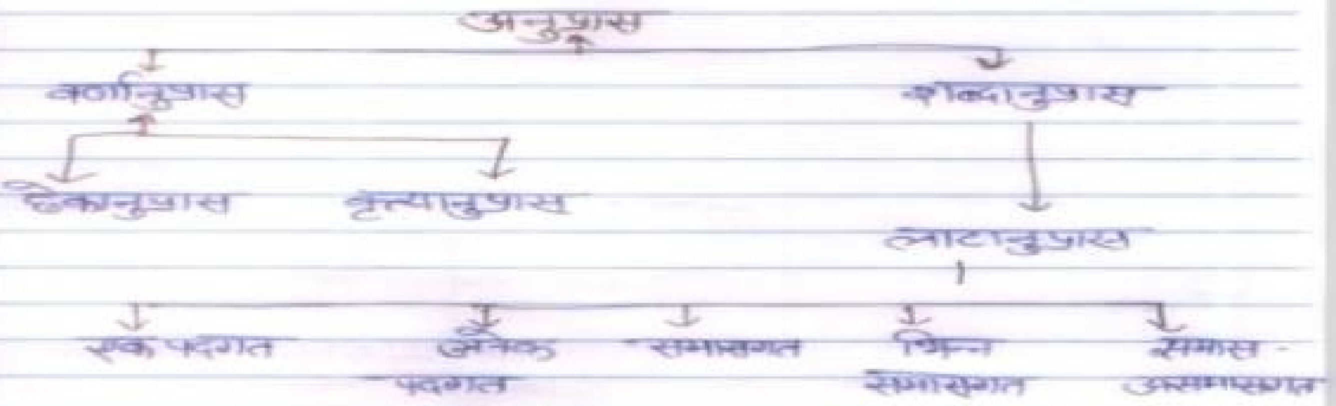


छेकानुप्रास :- जब किसी पद में या वाक्य में

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



व्यंजनों की आवृत्ति एक विशेष रूप में पद के मध्य या अन्त में आती है तब वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण →
"काक: काक: पिक: पिक:।"
यहाँ,
'क' वर्ण की आवृत्ति होने से छेकानुप्रास है।

उत्तर -1(ख) आचार्य मम्मट ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ काव्यप्रकाश में गुणों का विवेचन करते हुए कहा है —

'ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः।'

अर्थात्,
ये (माधुर्यादि गुण) रस के ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ के हैं। तथा शौर्यादि गुण आत्मा के हैं।

सरल शब्दों में,

जिस प्रकार शौर्यादि गुण आत्मा है उसी प्रकार माधुर्य, प्रसाद और ओज गुण रस के हैं।

गुण रस के स्रोत हैं।
गुणों के आधार पर ही रस की

Do Not Write anything in this Portion



सिद्धि होती है।

जैसे –

माधुर्य – श्रृंगारादि रस
प्रसाद – शान्तादि रस
ओज – वीर रस

उत्तर – (ख) 'दृष्टान्त अलंकार' में दो भिन्न वाक्यों में बिम्ब - प्रतिबिम्ब का भाव होता है।

परिभाषा :-

"यत्र साधर्म्य साधनं दृष्टं स्यात स दृष्टान्तः।"

अर्थात,

जहाँ उपमेय या कथ्य वस्तु की पुष्टि के लिए किसी प्रसिद्ध उदाहरण (प्रत्यक्ष) का वर्णन किया जाए वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है।

लक्षण :-

• इसमें एक वाक्य का बिम्ब दूसरे में प्रतिबिम्ब रूप में दिखायी देता है।

अर्थात

जब एक वस्तु की छाया दूसरे वस्तु में दिखायी दे प्रतिछाया के रूप में, तो वहाँ बिम्बप्रतिबिम्ब भाव होता है।

• इसमें प्रत्यक्ष, प्रसिद्ध उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



उदाहरण :-

यथा सूर्यः तमः नाशयति ।
तथा ज्ञानं अज्ञानं नाशयति ॥

अर्थात्,
जिस प्रकार सूर्य अन्धकार का नाश करता है उसी प्रकार ज्ञान अज्ञान को नष्ट करता है।
यहाँ एक वाक्य की छाया दूसरे वाक्य पर है ।—
अतः यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

उत्तर – (15) आचार्य मम्मट ने काव्य के मुख्य तत्व के रूप में गुण एवं अलंकार को बताया है। वे स्पष्ट रूप से कहते हैं —

"एष एव गुणालंकारः प्रविभागः।"
अर्थात्
ये (काव्य के तत्व) के रूप में गुण एवं अलंकार के रूप में बटे हुए हैं।

गुण :-
गुण काव्य की आंतरिक शक्ति है तथा रस के स्रोत हैं।
मम्मटाचार्य के अनुसार,

"गुणः शब्दार्थौ काव्य सौष्ठवौः।"

गुण शब्द और अर्थ में रस की अभिव्यक्ति करते हुए काव्य की ~~अवन~~ स्थायी रूप से रहते हैं।

अलंकार :-

अलंकार काव्य की बाह्य शोभा है। वे काव्य को सजाने, सवारने एवं आकर्षक बनाने का कार्य करते हैं।

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यस्यालंकारौ।"

जिस प्रकार मनुष्य को सजाने का कार्य आभूषण करते हैं परन्तु वे मूल तत्व नहीं है।

उसी प्रकार शब्दार्थ को सजाने का, प्रभाव उत्पन्न करने का एवं आकर्षक बनाने का कार्य अलंकार करते हैं।

ये काव्य में अनिवार्य नहीं परन्तु रस की वृद्धि एवं अभिव्यक्ति में ~~आवश्यक~~ सहायक है।

निष्कर्ष :-

आचार्य मम्मट गुण-अलंकार वैदर्भ स्थापित करते हुए कहते हैं-

- गुण काव्य के स्थायी तत्व हैं, जबकि अलंकार अनिवार्य नहीं हैं।

- गुण रस के स्रोत हैं, अलंकार रस की अभिव्यक्ति में सहायक हैं।

- गुण काव्य की आंतरिक शोभा है तथा अलंकार काव्य की बाह्य शोभा है।

इस प्रकार गुणालंकार वैदर्भ अर्थात अलग-अलग है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

14

## खण्ड 'ब'

उत्तर – 2 आचार्य मम्मट ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ काव्यप्रकाश में काव्य की परिभाषा, लक्षण, गुण, दोष, अलंकार, रसादि का अत्यन्त सुन्दर एवं विशद विवेचन किया है।

मम्मटाचार्य कहते हैं –
गुण वे तत्व हैं जो काव्य को प्रभावी एवं रमणीय बनाते हैं।

परिभाषा।–

"ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादयः इवात्मनः।"

गुण के भेद।–

आचार्य मम्मट ने कहा है –

माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रयस्ते न पुनर्दश।

गुण तीन हैं –

1- माधुर्य

2- ओज

3- प्रसाद

- माधुर्य गुण :-

"आह्लादकत्वं माधुर्यं श्रृंगारे।"

अर्थात्

जो आनन्दरूपता है वही माधुर्य गुण है और उसकी स्थिति श्रृंगार रस में होती है।

माधुर्य गुण कोमल, हृदयस्पर्शी, श्रवणप्रिय होता है।

उदाहरण -

'तस्य वचनं मधुं हृदयं च दयालुः।'

⟹ आचार्य मम्मट ने आनन्दवर्धनाचार्य के मत का समर्थन करते हुए कहा है -

"त श्रृंगारे विप्रलम्भे शान्ते च अतिशयान्वितम्।"

- ओज गुण।

"दीप्त्यात्मविस्तृतेर्हेतोजो: वीररसस्थितम्।"

अर्थात्

चित्त के विस्तार के कारण जो भाव प्रज्वलित होता है वही ओज गुण है और स्थिति वीर रस में होती है,

उदाहरण - वीरः शत्रुन् जयति।

⟹ ~~करो रौद्रे~~ "वीरात् वीभित्से ततो रौद्रे सातिशयमोजः।"

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



- प्रसाद गुण :-

"यत्रार्थ, शब्दश्च स्पष्टौ सः प्रसादः।"
अर्थात्,
जहाँ अर्थ और शब्द स्पष्ट हो वहाँ प्रसाद गुण होता है।

इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और अर्थ बोधगम्य होता है।

उदाहरण -
"रामो राजमणिः सदा विराजते।"

⇒ "यत्र सर्वत्र विदितस्थितिः।"

निष्कर्ष :-

इस प्रकार त्रिगुण रसों के स्रोत है।
क्योंकि माधुर्य से श्रृंगारादि तथा
ओज ~~बीर~~ से वीरादि तथा
प्रसाद से शान्त रस

की अभिव्यक्ति होती है।

अतः गुण रस के स्रोत हैं।

# खण्ड 'स'

उत्तर- 7 संस्कृत काव्यशास्त्र पर अनेक आचार्यों ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए शब्द गुणों को, जो कि भाषा की सौन्दर्यवृद्धि में सहायक हैं, अलग अलग रूप में वर्णित किया है।

आचार्य वामन ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' में शब्दगुणों की संख्या दस मानी है तो वहीं आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश में उन दसों शब्दगुणों को तीन प्रमुख गुणों के रूप में संक्षेपित कर लिए हैं —

आचार्य वामन कृत दस शब्दगुण —

1- श्लिष्ट — मिल जाने वाले शब्द
2- प्रसाद — स्पष्टता, सहजता
3- माधुर्य — कोमलता, हृदयस्पर्शी
4- ओज — तेजस्वी, बल प्रदर्शक
5- साम — लय
6- [illegible]न्ति — आकर्षण
7- [illegible]ता — विशालता, उच्चता
8- सौकुमार्य — लावण्य, कोमलता
9- समता — समानता, संतुलन
10- अरीढ — दोषरहित शब्द

इस प्रकार वामन ने उपर्युक्त दस गुणों द्वारा काव्य को प्रभावी तथा आकर्षक माना है।

Do Not Write anything in this Portion

1. आचार्य मम्मट का कथन :-

आचार्य मम्मट ने कहा है कि गुणों की अधिक संख्या का कोई विशेष प्रयोजन नहीं है क्योंकि वे अन्ततः तीन प्रमुख गुणों में ही निहित हो जाते हैं —

"माधुर्यौजः प्रसादाख्यास्त्रे न पुनर्दश:।"

अर्थात
गुण तीन हैं — न कि दस (वामनादि स्वीकृत) माधुर्य, ओज, प्रसाद।

| वामन के शब्दगुण | मम्मट के गुण |
|---|---|
| श्लेष | माधुर्य |
| कान्ति | माधुर्य |
| माधुर्य | माधुर्य |
| साम | माधुर्य |
| सौकुमार्य | माधुर्य |
| ओज | ओज |
| उदारता | ओज |
| औदार्य | ओज |
| समता | सर्वत्र (सभी रसों में) |
| प्रसाद | प्रसाद |

निष्कर्ष :-
इस प्रकार आचार्य मम्मट ने वामन के दसों गुणों का सार रूप प्रस्तुत करके

उन्हें तीन प्रमुख गुणों में संक्षेपित कर दिया है।
और माना है —
"माधुर्यौजः प्रसादाख्या गुणास्त्रि त्रय एव हि।"

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion